

Rs. 1,000 per acre for banana and pineapple.

(d) Among the steps proposed to be taken up by the Central Government, a Centrally Sponsored Scheme for organising production and exports of fruits (banana, mango and pineapple), formulated in consultation with the concerned States, is under consideration.

कृषि उत्पादन में वृद्धि के लिये गोबर खाद के उपयोग पर बल

4968. श्री नरेन्द्र सिंह बिष्ट: क्या कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या मिचीगन स्टेट यूनीवर्सिटी में एशिया सेन्टर के एक कृषि विशेषज्ञ ने यह कहा है कि एशियाई देशों को पश्चिमी उर्वरकों और कीटनाशी औषधियों पर विश्वास नहीं करना चाहिये तथा वे गोबर खाद पर आधारित वर्तमान कृषि प्रणाली में सुधार करके कृषि उत्पादन में वृद्धि कर सकते हैं ;

(ख) यदि हाँ, तो उसकी मुख्य बातें क्या हैं ; और

(ग) उक्त-प्रणाली से लाभ उठाने के लिये सरकार द्वारा क्या कार्यवाही की गई है अथवा किये जाने का विचार है ?

कृषि मंत्रालय में राज्य मंत्री श्री (शेर सिंह) : (क) से (ग) . मिचीगन स्टेट विश्व-विद्यालय में एशियन सेन्टर के एक कृषि विशेषज्ञ द्वारा व्यक्त किये गये विचारों की सूचना सरकार को नहीं है । परन्तु यह कहा जा सकता है कि भारत में फसलों के बफल उत्पादन के लिये कार्बनिक खाद तथा रासायनिक उर्वरक दोनों के उपयोग

सिफारिश की गई है । यद्यपि, कृषि के भौतिक तथा जैविक परिस्थितियों के सुधार पर कार्बनिक खाद का लाभदायक प्रभाव होता है, लेकिन ये कम स्तर के होते हैं, क्योंकि इन में पौध पोषकता सहज रूप में उपलब्ध नहीं होती है । उपलब्ध कार्बनिक खाद की मात्रा भी सीमित होती है ।

सघन कृषि के लिये सहज रूप में उपलब्ध होने वाले पौध-खाद की बड़ी मांग को पूरा करने की दृष्टि से, जबकि प्रति इकाई समय में प्रति इकाई क्षेत्र पर अधिकतम उत्पादन पर से अधिक उत्पादन प्राप्त करने पर जोर दिया जा रहा है, सान्द्रित तथा सहज रूप से उपलब्ध फार्म में पौध पोषक वाले उर्वरकों का प्रयोग आवश्यक है । भरपूर फसलों के उगाने के फलस्वरूप, जिस भूमि में पौध पोषक काफी मात्रा में समाप्त हो गये हैं, उसकी उत्पादकता को बनाये रखने में भी उर्वरकों का प्रयोग सहायता करता है । अनुमान लगाया गया है कि चौथी पंचवर्षीय योजना के दौरान, 290 लाख मीटरी टन के अतिरिक्त खाद्यान्न के उत्पादन में से लगभग 220 लाख मीटरी टन के उत्पादन का क्षेत्र अधिक उत्पादनशील किस्मों के बीजों के साथ उर्वरकों के बढ़ते हुये प्रयोग को है । इस प्रकार यह देखा जायेगा कि प्राधुनिक कृषि में उर्वरकों का प्रयोग अपरिहार्य है, जबकि बढ़ती हुई जनसंख्या की खाद्य तथा वस्त्र की मांग को पूरा करने के लिये फसल का अधिक उत्पादन करना है ।

सूम्निहीन आदिवासियों तथा हरिजनों को सूम्नि का आवंटन

4969. श्री धन सिंह प्रधान: क्या कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) देश भर में कितने प्रतिशत सूम्नि-

हीन आदिवासियों तथा हरिजनों को भूमि आवंटित की गई है तथा कितने एकड़ भूमि आवंटित की गई है ;

(ख) क्या इस प्रकार वितरित भूमि का कब्जा उनके नाम कर दिया गया है ; और

(ग) भविष्य में इस कार्य की गति तेज करने के लिये सरकार का विचार क्या कार्यवाही करने का है?

कृषि मंत्रालय में राज्य मन्त्री (श्री शेर सिंह): (क) में (ग) राज्य सरकारों से अपेक्षित जानकारी एकत्रित की जा रही है और मिलते ही सभा प्लेट पर रख दी जाएगी ।

Development of Japanese Steel making Technology in India

4970 SHRI C K CHANDRAPAN : Will the Minister of STEEL AND MINES be pleased to state :

(a) whether Government are aware that with the entire quantity of iron ore manganese imported, Japan has built up a huge iron and steel industry; and

(b) if so, whether Government have considered the possibility of using Japanese steel making technology to set up iron and steel industries in regions where such industries are very essential as in Kerala ?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF STEEL AND MINES (SHRI SHAHN AWAZ KHAN): (a) Government is aware that Japan has been able to build up a huge iron and steel industry based mainly on imported raw materials like iron ore, coal, manganese ore etc.

(b) Government is also aware of the technological and efficiency levels reached

in Japan. It is more essential for India to follow Japan in technology rather than in basing the steel industry in our country on imported raw materials, since India itself is one of the important exporters of iron ore, manganese ore etc. To the extent the availability of such raw materials within the country are an advantage, this advantage should not be lost. Government is, however, assisting Kerala to set up a scrap based electric furnace steel-making plant with a capacity of 50,000 tonnes.

Uses of China Clay in Modern Industries

4971. SHRI C. K. CHANDRAPAN : Will the Minister of STEEL AND MINES be pleased to state :

(a) the important uses of china clay, raw and refined, in modern industries in India;

(b) the tonnage of white china clay mined in 1970-71;

(c) whether Government have investigated the export potential of this material; and

(d) if so, whether Government will lay on the Table, a statement showing State-wise figures for (i) quantity of white china clay mined in the above year; (ii) the labour employed in such mining; and (iii) the value of the annual turnover ?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF STEEL AND MINES (SHRI SHAH NAWAZ KHAN): (a). China clay is chiefly utilised in the manufacture of porcelain Wares, refractories, as filler in paper, textile and rubber industries. It is also used in substantial quantities as a mixture in fertilizer industry, in the manufacture of insecticide, paints, pharmaceuticals, glass, cosmetics, abrasive industries etc.

(b) The production of saleable crude china clay during 1970 and for the period January to March in 1971 was 2,10,795 and 71,166 tonnes respectively. The